विद्या भवन गोविंदराम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय, उदयपुर

न्यूज़ लेटर

फरवरी, 2024

प्राचार्य की कलम से :

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–स्कूल शिक्षा–2023 हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के दार्शनिक स्वरूप को क्रियान्वित करने का व्यापक दस्तावेज है, जो भारत की शिक्षा व्यवस्था को सकारात्मक रूप से परिवर्तन करने की कल्पना करता है। यह विद्यार्थियों के समग्र विकास, शिक्षकों के सशक्तीकरण, शिक्षाशास्त्र से जुड़ाव, कला एवं संस्कृति का विषयों तथा विद्यालय की संस्कृति से एकीकरण, संपोषित अभ्यासों एवं भाषा दक्षताओं पर केंद्रीत है। एनसीएफ–एसई स्कूली शिक्षा के माध्यम से ज्ञान, क्षमता एवं मूल्य को विकसित करने की बात करता है जिससे नैतिक, रचनात्मक, सक्रिय, करुणाशील और आजीवन सीखने वाला शिक्षार्थी तैयार हो सके, जो संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप समाज की रचना तथा उसको आगे बढ़ाने में अपनी सक्रिय भागीदारी दे सके, ताकि 21वीं सदी की आकांक्षाओं और जरूरतों के अनुसार समाज का निर्माण हो सके। इस रूपरेखा में न्याय, समानता, संपोषितता और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के माध्यम से समाज को बदलने की बात कही गई है। यह दृष्टिकोण हमारे देश के आर्थिक विकास वैज्ञानिक उन्नति, सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक व पर्यावरणीय संरक्षित क्षेत्रों में वैश्विक नेतृत्व के अनुरूप है। इसके लिए इस दस्तावेज में विद्यालय संस्कृति एवं इको सिस्टम का विस्तृत विवरण कर सभी अभिधारकों की भूमिका को बताया गया है। इस दस्तावेज की अभिधारकों में समझ विकसित करने के लिए महाविद्यालय में दो चरणों में कार्यशाला का आयोजन किया गया। पहला चरण इन–हाउस हुआ, जिसमें संकाय सदस्यों ने 20 कार्य दिवसों में 15 अलग–अलग थीम पर छोटे–छोटे समूह में पढ़ा और अपने ही बड़े समूह में साझा किया। इस प्रकार हमारे महाविद्यालय के सभी संकाय सदस्य अपनी पूर्व समझ के साथ बाद में द्वितीय चरण की चार दिवसीय कार्यशाला में सम्मिलित हुए। इस कार्यशाला में प्रक्रियात्मक उद्देश्यको केंद्र में रखा गया। मिलकर पढ़ने और समझने की प्रक्रिया ने अकादमिक सहयोग की संस्कृति का पोषण किया।

–डॉ. फरज़ाना इरफान

संपादन

सलाहकार – जितेंद्र तायलिया, अनुराग प्रियदर्शी

प्राचार्य – फरज़ाना ईरफान

संपादक – गिरीश शर्मा

प्रूफ रिडिंग – जगदीश चंद्र आमेटा

ले–आउट, डिजाईनिंग – चिराग धुप्या

विद्या भवन गोविन्दराम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय,
डॉ. मोहनसिंह मेहता मार्ग, देवाली उदयपुर, राजस्थान

ई–मेल vbcteudr@gmail.com, 0294–2451814

Website-www.vidyabhawan.in

इंटर्नशिप अभिविन्यास

1 फरवरी, 2024। महाविद्यालय के प्रथम वर्ष के बी.एड. के विद्यार्थियों का एक दिवसीय इंटर्नशिप अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित हुआ। पहले सत्र में अनुष्का अकादमी के हेमन्त बाबेल एवं मीनल ने विद्यार्थियों को प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के बारे में बताया। दूसरे सत्र में विद्या भवन सोसायटी के वेलनेस विभाग से डॉ. निष्ठा ने विद्यार्थियों को स्कूली शिक्षा के दौरान किशोरावस्था की समस्याओं पर चर्चा की। तीसरे सत्र में डॉ. मीनाक्षी शर्मा ने इंटर्नशिप के दौरान किए जाने वाले कार्यों से विद्यार्थियों को अवगत करवाया। अंतिम सत्र में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. फरजाना ईरफान ने इंटर्नशिप से संबंधित सामान्य निर्देश दिए। अभिविन्यास कार्यक्रम के बाद विद्यार्थियों ने अलोटमेंट लेटर जमा करवाए और महाविद्यालय ने उन्हें रिलिविंग लेटर इश्यू किए। अगले दिन से सभी विद्यार्थी इंटर्नशिप के लिए अपने–अपने विद्यालय गए।

सर्टिफिकेशन कोर्स में भागीदारी

1 फरवरी, 2024। महाविद्यालय की रीडर डॉ. जेहरा बानू ने मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र की ओर से केंद्रीय विश्वविद्यालय साउथ बिहार द्वारा आयोजित 9 दिवसीय ऑनलाईन सर्टिफिकेट कोर्स में भाग लिया। कोर्स का विषय 'एनईपी–2020 ओरिएंटेशन एंड सेनसेटाईजेशन प्रोग्राम था।

ऑनलाईन कार्यशाला में भागीदारी

1 फरवरी, 2024। महाविद्यालय की व्याख्याता डॉ. मीनाक्षी शर्मा ने मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र की ओर से आयोजित 10 दिवसीय 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति अभिविन्यास एवं संवेदीकरण' कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला ऑनलाईन थी। विषय विशेषज्ञों द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा, शोध में तकनीकी कौशल, बहु अनुशासनिक शिक्षा, विविधता, रोल ऑफ लीडरशिप, कन्सेप्ट ऑफ होलिस्टिक एजुकेशन आदि विषयों पर 16 सत्र हुए। कार्यशाला के पूर्ण होने पर संभागियों का मूल्यांकन भी हुआ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विज्ञान शिक्षा

3 फरवरी, 2024। अज़ीम प्रेमजी विश्व विद्यालय एवं महाविद्यालय के सान्निध्य में 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विज्ञान शिक्षा' विषय पर वेबिनार हुआ। मुख्य वक्ता डॉ. मानसी थपलियाल नवानी थीं। उन्होंने चर्चा की कि कैसे 'जन विज्ञान' और 'वैकल्पिक विज्ञान' के दो दृष्टिकोण विज्ञान शिक्षा के सामाजिक उद्देश्यों को शामिल करने और संबोधित करने में मदद कर सकते हैं। संवाद में उन्होंने इस बात पर भी रोशनी डालने की कोशिश की कि क्या 'जन विज्ञान' और 'वैकल्पिक विज्ञान' दोनों दृष्टिकोण परंपरागत रूप में स्कूलों में विज्ञान पढ़ाने के लिए 'प्रशिक्षित' होने वाले अधिकांश शिक्षकों की पहुंच से बाहर रही है। वेबिनार का संचालन डॉ. विद्या मेनारिया ने किया।

राज्य स्तरीय कार्यशाला में भागीदारी

8 फरवरी, 2024। महाविद्यालय की रीडर डॉ. मनीषा शर्मा एवं प्राध्यापिका डॉ. मीनाक्षी शर्मा ने आरएससीईआरटी में आयोजित 4 दिवसीय कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया। कार्यशाला आर. पी. एस. टी. (राजस्थान

प्रोफेशनल स्टेण्डर्स फोर टीचर) विषय पर थी। कार्यशाला में डाईट, शिक्षक शिक्षा, स्कूल शिक्षा, संस्कृति विभाग, आईएएसई आदि के हितधारकों ने विषय विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

क्षमता संवर्द्धन कार्यक्रम में भागीदारी

17 फरवरी, 2024। महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. खीमाराम काक ने केंद्रीय विश्वविद्यालय, पंजाब द्वारा आयोजित दो सप्ताह के कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम में भाग लिया। कार्यक्रम 5 से 17 फरवरी तक आयोजित हुआ। इसमें सामाजिक विज्ञान में शोध, इसके प्रकार, प्रमुख विधियां, गुणात्मक एवं मात्रात्मक शोध में मापन, शोध में नैतिकता, संबंधित साहित्य के अध्ययन का महत्त्व पर चर्चा हुई। कार्यशाला के दौरान विभिन्न विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिए और व्यावहारिक अनुभव साझा किए। प्रतिभागियों को फील्ड सर्वे और पेपर क्लिनिक सत्रों में गुणवत्तापूर्ण शोध कार्य की जानकारी दी। प्रतिभागी फील्ड सर्वे हेतु जग्गाराम तीर्थ तथा तख्त श्री दमदमा साहिब–तलवंडी गए। भारत के सबसे प्राचीन कनिष्क कालीन भटिन्डा के ऐतिहासिक दुर्ग किला मुबारक जो अजमेर शासक पृथ्वीराज चौहान के साम्राज्य का हिस्सा था एवं यहीं पर मध्यकालीन शासिका रजिया सुल्ताना को कैद करके रखा गया था, का भी भ्रमण करने का अवसर मिला। कार्यशाला का संचालन विश्वविद्यालय के आर्थिक अध्ययन विभाग, पंजाबी विभाग, और गणित एवं सांख्यिकी विभाग के संयुक्त सहयोग से आई. सी. एस. एस. आर. नई दिल्ली द्वारा प्रदान की गई फंडिंग से किया गया।

ऑनलाईन प्रशिक्षण में भागीदारी

19 फरवरी, 2024। महाविद्यालय की रीडर डॉ. मनीषा शर्मा एवं व्याख्याता डॉ. विद्या मेनारिया ने 15 दिवसीय ऑनलाईन प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण का विषय 'शोध कार्यप्रणाली में लेखन कौशल' था। प्रशिक्षण मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग की ओर से आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण में डॉ. विद्या मेनारिया ने 'क्रॉस कल्चर रिसर्च' विषय पर सत्र भी लिया।

'एनसीएफ–एसई में अंतर्विषयकता' पर वेबिनार

24 फरवरी, 2024। अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय की ओर से 'एनसीएफ–एसई–2023 में अंतर्विषयकता' विषय पर वेबिनार हुआ। वक्ता अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरू के स्कूल ऑफ कोंटीनुइंग एजूकेशन की डॉ. निमरत कौर थीं। उन्होंने बताया कि स्कूली शिक्षा में विषयों को अलग–अलग सिखाया जाए अथवा एक–दूसरे के साथ जोड़कर, हमेशा बहस का विषय रहा है। अकादमिक तौर पर यह माना जा सकता है कि हर विषय का अपना ज्ञानमीमांसात्मक ढांचा होता है, किन्तु सीखने वाले के अनुभव क्षेत्र में यह अमूमन अलग–अलग नहीं होता। अक्सर कुछ नीतिसंगत और नैतिक प्रश्न भी उठते हैं, जिनको अंतर्विषयक दृष्टिकोण

से ही समझा जा सकता है। यह एक कारण है, जिसकी वजह से एनसीएफ–एसई–2023 में विषयों के अंतर्संबंधों पर खास जोर दिया गया है। उद्देश्य यह है कि विद्यार्थियों में किसी भी स्थिति को अलग–अलग पक्षों के आलोक में समझने की क्षमता विकसित हो। इस चर्चा में पाठ्यक्रम में अंतर्विषयकता को पाठ्यचर्या रूपरेखा में क्यों और कैसे सम्मिलित किया गया है, को प्रस्तुत किया गया। परिचय डॉ. संतोष उपाध्याय ने दिया तथा धन्यवाद डॉ. विद्या मेनारिया ने दिया।

एनसीएफ पर प्री–फेज़ कार्यशाला

23 फरवरी, 2024। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) द्वारा स्कूल शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2023 जारी की गई, जिससे राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 के नियमों के तहत शिक्षा प्रणाली में महत्त्वपूर्ण सुधार संभव होंगे। इसका उद्देश्य शिक्षाशास्त्र सहित पाठ्यक्रम में सकारात्मक बदलावों के माध्यम से एनईपी– 2020 में परिकल्पित भारत की स्कूली शिक्षा प्रणाली को सकारात्मक रूप से बदलने में मदद करना है। संकाय सदस्यों में एन. सी.एफ.–23 पर विस्तार से चर्चा कर इसके प्रति समझ विकसित करने हेतु दिनांक 1 से 23 फरवरी तक कार्यशाला का आयोजन हुआ। आयोजन समिति के सदस्यों डॉ. जेहरा बानू, डॉ. खीमाराम काक, डॉ. मीनाक्षी शर्मा एवं डॉ. विद्या मेनारिया ने 23 दिवसीय कार्यशाला की योजना बनाकर क्रियान्वित की। एन.सी.एफ.के प्रमुख पांच भागों भाग–ए दृष्टिकोण 1. स्कूली शिक्षा के उद्देश्य और पाठ्यचर्या क्षेत्र 2. स्कूल चरण–तर्क और डिजाइन 3. सीखने के मानकों, सामग्री, शिक्षाशास्त्र और मूल्यांकन के लिए दृष्टिकोण 4. समय आवंटन भाग–बी क्रॉस–कटिंग थीम 1. भारत और भारतीय ज्ञान प्रणालियों में जड़ें 2. मूल्य और स्वभाव 3. पर्यावरण के बारे में सीखना और उसकी देखभाल करना 4. स्कूलों में समावेश 5. विद्यालयों में मार्गदर्शन एवं परामर्श 6. स्कूलों में शैक्षिक प्रौद्योगिकी भाग–सी स्कूल विषय 1. मूलभूत चरण में सीखना 2. भाषा शिक्षा 3. गणित शिक्षा 4. विज्ञान शिक्षा 5. सामाजिक विज्ञान शिक्षा 6. कला शिक्षा 7. अंतःविषय क्षेत्रों में शिक्षा 8. शारीरिक शिक्षा और कल्याण 9. व्यावसायिक शिक्षा भाग–डी स्कूल की संस्कृति और प्रक्रियाएं 1. स्कूल संस्कृति 2. स्कूल प्रक्रियाएं भाग–ई एक सहायक पारिस्थितिकी तंत्र बनाना 1. कार्यान्वयन के लिए क्षमता निर्माण 2. सीखने के लिए उपयुक्त वातावरण सुनिश्चित करना 3. शिक्षकों को सक्षम एवं सशक्त बनाना 4. समुदाय और पारिवारिक जुड़ाव पर चार–पांच दिन तक समूह में विस्तार से चर्चा हुई। प्रत्येक भाग की समाप्ति पर यू.जी. सी हॉल में सम्बंधित समूह के कन्वीनर ने चार अलग–अलग दिन अपने– अपने समूह में हुई गहन चर्चा पर संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस कार्यशाला का उद्देश्य महाविद्यालय के सदस्यों में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2023 के प्रति समझ विकसित करना था, ताकि वे शिक्षक–शिक्षा से जुड़े अभिधाकों को एन.सी.एफ.–2023 के उद्देश्यों, सिद्धांतों और दृष्टिकोण से अवगत करवा सकें। इसी कार्यशाला के आधार पर एन.सी.एफ. (स्कूल शिक्षा)–2023 पर विद्या भवन गोविन्दराम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय, उदयपुर एवं अज़ीम प्रेमजी विश्विद्यालय, बेंगलुरु के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 28 फरवरी 2024 से 2 मार्च 2024 तक चार दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन होने जा रहा है।

स्कूल शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या पर संवाद

28 फरवरी, 2024। महाविद्यालय एवं अज़ीम प्रेमजी विश्व विद्यालय, बैंगलुरू के संयुक्त तत्वावधान में चार दिवसीय कार्यशाला प्रारंभ हुई।

कार्यशाला का विषय 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (स्कूल शिक्षा) –2023' था। यह कार्यशाला दो चरणों में आयोजित की गई। पहले चरण में महाविद्यालय के प्राध्यापकों ने छोटे–छोटे समूहों में एनसीएफ को पढ़ा, चर्चा की और फिर बड़े समूह में इसका प्रस्तुतीकरण किया। इस प्रकार कार्यशाला से पूर्व एक व्यापक समझ बनाई, उसके बाद चार दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता विद्या भवन सोसायटी के मुख्य संचालक डॉ. अनुराग प्रियदर्शी ने की। उन्होंने इसकी महत्ता बताते हुए शिक्षा के उद्देश्यों और समाज की आवश्यकताओं के संदर्भ में युवाओं को प्रेरणा देते हुए आयोजन की बधाई दी। मुख्य अतिथि मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. अरुण चतुर्वेदी ने विद्या भवन की 93 साल पुरानी ऐतिहासिक महत्ता और विशिष्ट संस्कृति तथा स्कूल शिक्षा के बारे में बताया। विशिष्ट अतिथि मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के प्रबंध विभाग के पूर्व प्रोफेसर और विद्या भवन सोसायटी के एक्जीक्यूटीव सदस्य प्रो. अनिल कोठारी ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति एवं मानव मूल्यों की चर्चा की। स्वागत समारोह के बाद अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय की वाइस चांसलर प्रो. इंदु प्रसाद का ऑनलाईन सत्र हुआ। उन्होंने एनसीएफ पर विस्तार से चर्चा करते हुए विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर चर्चा की। इस सत्र के बाद संभागियों ने तीन समूहों में बैठ कर एनसीएफ को पढ़ा, चर्चा की और प्रस्तुतीकरण तैयार किया। सुबह के सत्रों को एनसीईआरटी की प्रो. रंजना अरोड़ा, डॉ. के विजयन तथा अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से प्रो. हृदयकांत दीवान एवं डॉ. निमरत कौर ने संबोधित किया तथा उसके बाद समूह चर्चा हुई। कार्यशाला में हरियाणा, उत्तरप्रदेश, कर्नाटक, दिल्ली एवं राजस्थान से 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला समन्वयक डॉ. जेहरा बानू एवं संयोजक डॉ. खीमाराम काक थे। संचालन डॉ. मीनाक्षी शर्मा ने तथा धन्यवाद डॉ. विद्या मेनारिया ने दिया।